दीपक कुमार

कल्कि

मानवता के साथ एक मसीहा की लड़ाई

Notion Press

Old No. 38, New No. 6
McNichols Road, Chetpet
Chennai - 600 031

First Published by Notion Press 2016
Copyright © Deepak Kumar 2016
All Rights Reserved.

ISBN 978-1-945621-78-9

This book has been published with all efforts taken to make the material error-free after the consent of the author. However, the author and the publisher do not assume and hereby disclaim any liability to any party for any loss, damage, or disruption caused by errors or omissions, whether such errors or omissions result from negligence, accident, or any other cause.

No part of this book may be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews.

अंतर्वस्तु

1.	वर्तमान-भाग-1	1
2.	मेरा साक्षात्कार	7
3.	मेरी भविष्यवाणी	15
4.	मेरा नया घर	29
5.	मेरा बचपन	45
6.	मेरी शक्तियों की शुरुआत	65
7.	दिल्ली	99
8.	कुसुम की शादी	149
9.	गांव के मुखिया का धोखा	171
10.	पार्लियामेंट	187
11.	8 साल बाद	231
12.	मेरी वापसी	249
13.	वर्तमान-भाग-2	277

वर्तमान-भाग-1

मैं दुनिया के सामने तब आया, जब मैं भी राजनीति में उतरा| मेरा मानना था कि, मेरा एक भाषण, सिर्फ एक भाषण लोगों को हिलाकर रख देगा| उन्हें मेरी ओर खींच लेगा| और जैसा मैंने सोचा था, बिलकुल वैसा ही हुआ| मेरे एक भाषण ने देश में एक ऐसी लहर पैदा कर दी, जिसे रोक पाना किसी के बस की बात नहीं थी| शायद मेरी भी नहीं|

★★★

ये बात उस वक़्त की है जब मैंने दुनिया के सामने अपना नक़ाब उतार दिया और उसे अपनी हकीकत बताई| उस सुबह मेरी आँख वक़्त से पहले ही खुल गई| कमरे की सभी खिड़कियाँ, सभी दरवाजे बंद थे, फिर भी मुझे शोर सुनाई दे रहा था| भीड़ का शोर, लोगों के चिल्लाने का शोर| मैं नींद में था| मैंने एक आँख खोलकर पास की टेबल पर रखी घड़ी में वक़्त देखा| देखकर मेरी आँखें बड़ी हो गई| अभी 6 बजने में 5 मिनट थे| मुझे लग रहा था आज देर हो गई| पर जब देखा कि अभी तो 6 भी नहीं बजे और इतना शोर, मैं हैरान हो गया| "क्या मुसीबत है|" खुद से कहता हुआ मैं बिस्तर से उठा और खिड़की के पास गया| मैंने पर्दा हटाकर बाहर देखा, और बस देखता ही रह गया| घर के गेट के बाहर बहुत भीड़ थी| वो लोग अंदर आने की कोशिश कर रहे थे| और मेरे चौकीदार उन्हें रोकने की कोशिश कर रहे थे| मुझे कुछ समझ नहीं आया| ये सब आखिर हो क्या रहा है| तभी घड़ी का अलार्म बजा| मैंने जल्दी से भागकर अलार्म बंद किया| क्योंकि मेरी पत्नी कुसुम अभी तक सो रही थी| कल रात हमें सोने में देर हो गई थी| इसलिए मैंने जल्दी से अलार्म बंद कर दिया, ताकि कुसुम की नींद ना टूट जाए| ये बात अलग है कि कुसुम को आवाज़ सुनाई दे गई थी, लेकिन उसकी नींद नहीं टूटी| अलार्म बंद करके

मैं फिर खिड़की के पास गया और बाहर देखने लगा| "अजीब है!" खुद से कहता हुआ मैं वहाँ से चल दिया|

मैंने धीरे से कमरे का दरवाजा खोला और बंद किया| सामने से आलोक आ रहा था| हमेशा की तरह मेरे लिए और कुसुम के लिए जूस लेकर| "गुड मोर्निंग भैया| आज जल्दी उठ गए आप|" कहकर आलोक ने ट्रे पास में रखी टेबल पर रख दी और झुककर मेरे पाँव छूने लगा| जब वो उठा तो मैंने उससे कहा, "आलोक, मैंने तुमसे कितनी बार कहा है मेरे पाँव मत छूआ करो| मुझे अच्छा नहीं लगता|" मैंने थोड़ा दुखी होकर कहा| पर वो मेरी सुने तो ना| उसने मुस्कुराकर कहा, "आप मेरे बड़े भाई हैं| बड़ा भाई पिता समान होता है ना! मेरी असली जगह तो आपके चरणों में ही है भैया| और वैसे भी, आप तो हमारे भगवान हो| मेरी जगह कोई और होता तो वो भी यही करता| लेकिन सबको नहीं मिलता ये सुनहेरा मौका| मुझे मिला है, और मैं इसे खोना नहीं चाहता|" ये सब कहकर वो फिर मुस्कुराने लगा| "आलोक....." मैंने परेशान होकर कहा|

★★★

"ये सब बातें छोड़िए ना भैया| आप ये जूस लीजिए| और आज आप इतनी जल्दी कैसे उठ गए?" आलोक ने मुझे जूस का गिलास देते हुए कहा| "अरे यार इतना शोर जो हो रहा है| वैसे ये सब हो क्या रहा है यहाँ?" मैंने जूस का गिलास लेते हुए और खिड़की से बाहर देखते हुए पूछा| यहाँ से भीड़ और ज्यादा दिखाई दे रही थी|

"आप नहीं जानते?" आलोक ने सामने से मुझसे ही सवाल किया|

"नहीं तो....." मैंने याद करते हुए और अपना सिर हिलाकर मना करते हुए कहा|

आलोक थोड़ा मुस्कुराते हुए कहने लगा, "ये आप ही की माया है भैया| आपने ही इन्हें यहाँ आने का न्योता दिया था|"

मैं आलोक को थोड़ा घूरने लगा| और उसे घूरते हुए बोला, "मैंने कब बुलाया इन्हें यहाँ?" आलोक ने मुझे याद दिलाते हुआ कहा, "कल आपने स्पीच दी थी!"

"ओह! तो इसलिए आए हैं ये लोग यहाँ| काफी जल्दी असर हो गया हाँ| पिछली बार तो ऐसा नहीं हुआ था| लेकिन मुझे ये समझ नहीं आ रहा ये लोग यहाँ आए क्यों हैं?"

"आपसे मिलने, बातें करने, इंटरव्यू लेने और क्यों!" आलोक ने कहा| मैं दीवार का सहारा लेकर खड़ा हो गया और आलोक से कहने लगा, "आलोक मुझे पता था मेरी स्पीच लोगों पर बहुत असर करेगी| लेकिन मैं वो वजह जानना चाहता हूँ जिसके लिए वो यहाँ आए हैं| मैं जानना चाहता हूँ कि वो यहाँ दिल से आए हैं या पैसों के लिए|" आलोक ने मुझे समझते हुए और मुझे समझाते हुए कहा, "भैया वो तो वक़्त ही बताएगा कि लोगों के दिल में आखिर है क्या| फिलहाल तो आपको नीचे चलकर उनसे मिलना चाहिए| क्योंकि जब तक आप उनसे मिल नहीं लेते, उनके सवालों के जवाब नहीं दे देते, वो यूँ ही आपके आगे-पीछे घूमते रहेंगे| और वैसे भी भैया, कल आपने लोगों से कोई छोटे-मोटे वादे तो किए नहीं, बहुत बड़ी बातें कही हैं आपने| ये लोग इतनी आसानी से तो आपका पीछा नहीं छोड़ने वाले|" आलोक ने हँसते हुए कहा|

"चलो फिर|" मैंने नीचे चलने को कहा| तभी आलोक ने कहा, "आप चलिए भैया मैं भाभी को जूस देकर आता हूँ|" मैंने आलोक को रोकते हुए कहा, "अरे आलोक! कुसुम अभी सो रही है| उसे सोने दो| बाद में दे देना जूस|"

"ठीक है भैया जैसा आप कहें|"

★★★

फिर मैं और आलोक नीचे आने लगे| आते वक़्त आलोक मुझसे कह रहा था, "भैया इनमें से ज्यादातर प्रेस और मीडिया वाले हैं| ये लोग आपका इंटरव्यू लेना चाहते हैं| इन्हीं के ज़रिये लोगों को उनके सवालों के जवाब मिलेंगे| और आपको तो पता ही है ना कि इंटरव्यू वाले कुछ भी पूछ सकते हैं| तो आप तैयार रहना| वैसे सच कहूँ तो आपको इसमें काफी मज़ा आएगा|"

जब हम नीचे पहुँचे तो वहाँ का पूरा माहौल ही बदल गया| एक पल पहले जहाँ बहुत शोर था, अब वहाँ खामोशी छा गई थी| सबकी निगाहें मुझपे ही टिकी थी| वो पल मेरे लिए भी बहुत ख़ास था| मेरी इतनी कोशिशों के बाद लोग खुद चलकर मेरे पास आए थे| मैं नहीं जानता था उनके दिल में क्या था? वो क्यों मेरे पास आए थे? मुझसे क्या चाहते थे? मैं बस इतना चाहता था कि लोग मेरा साथ दें| एक बेहतर दुनिया बनाने में| वो दुनिया जो कभी हुआ करती थी| लेकिन अब कहीं खो गई| मैं उसे फिर से बनाने के लिए कुछ भी कर सकता था| बस लोगों का साथ चाहिए था|

मैं खामोश खड़ा उस भीड़ को देख रहा था| तभी उन्होंने फिर से चिल्लाना शुरू कर दिया| मैंने आलोक से कहा, "आलोक एक साथ इतने सारे

लोगों से मिलना मुमकिन नहीं| तुम इन्हें फ़िल्टर करो| जो सबसे बेहतर लोग हैं उन्हें ही अंदर लाओ|"

"जी भैया|" कहकर आलोक चला गया|

★★★

और मैं चला गया अपने घोड़े के पास| मैं हर सुबह उसके पास जाता हूँ| उसे भी मेरा इंतज़ार रहता है| जब तक मैं उसे अपने हाथों से ना खिलाऊँ, वो कुछ नहीं खाता| पानी तक नहीं पीता| मुझे देखते ही वो हमेशा की तरह खुश हो गया| मैं उसके पास गया|

"हेय! कैसे हो?" मैंने उसका चेहरा छूकर उसे सहलाते हुए कहा| वो भी मेरा मुह चाटने लगा| "बस-बस! हाँ मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ|" मैंने उसे सँभालते हुए कहा| मैं जब भी उसके पास जाता हूँ वो मुझे अपना प्यार जताने लगता है| उसका प्यार ही हम दोनों के वजूद का सबूत है| "अब बहुत हो गया हाँ| चलो कुछ खा लो तुम|" फिर मैंने उसे अपने हाथों से ताजा घास खिलाई और उसे सहलाने लगा| उसे सहलाते हुए मैं उस भीड़ को देखने लगा| आलोक ने मुझे इशारे में कहा कि लोग उसकी बात सुनने को तैयार ही नहीं हैं|

★★★

उधर कुसुम भी उठ गई थी| "अरे बाप रे! आज तो देर हो गई|" घड़ी में वक़्त देखकर उसने खुद से कहा| उसने मुझे इधर-उधर देखा पर मैं उसे नहीं दिखा| फिर वो जल्दी से उठी, बिस्तर ठीक किया और नीचे आने लगी| "आज अलार्म बजा नहीं या मुझे सुनाई नहीं दिया? प्रेम भी कमरे में नहीं था| आज तो आलोक भी नहीं आया| किसी ने मुझे जगाया क्यों नहीं? और ये शोर कैसा? हो क्या रहा है आज?" कुसुम खुद से बातें करते हुए नीचे आ रही थी| हॉल में बाबा और चाचा जी बैठकर अखबार पढ़ रहे थे| माँ, भुआ जी, चाची जी, और दीदी नाश्ता बना रही थी| कुसुम ने सबको गुड मोर्निंग विश किया| और पूछा, "प्रेम कहाँ है?" चाचा जी ने अखबार पढ़ते हुए कहा, "बाहर|"

कुसुम बाहर आई| बाहर इतने सारे लोग देखकर कुसुम थोड़ा घबरा गई| वो मेरे पास आ गई| कुसुम ने भीड़ की ओर देखते हुए पूछा, "प्रेम, ये सब क्या हो रहा है?"

मैंने कुसुम का इशारा नहीं देखा था| क्योंकि कुसुम मेरे पीछे थी और मैं घोड़े को घास खिला रहा था| लेकिन मैं जानता था वो किसके बारे में पूछ रही है|

"ये..... ये कल की स्पीच का असर है|" मैंने कहा| कुसुम ने फिर पूछा, "लेकिन ये लोग यहाँ क्या कर रहे हैं?"

मैं कुसुम को कोई जवाब देता इससे पहले आलोक वहाँ आ गया और उसने कहा, "गुड मोर्निंग भाभी|" लेकिन कुसुम बहुत घबराई हुई थी| कुसुम बहुत सीधी और भोली है| उसने आलोक को देखते हुए बस अपना सिर हिला दिया|

★★★

"भैया|"

"हुम्!"

"मैंने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की लेकिन वो लोग कुछ सुनने को तैयार ही नहीं हैं| आपको ही उनसे बात करनी होगी|" आलोक की बात सुनकर मैं एक दम ठहर सा गया| मैं जैसा खड़ा था वैसा ही खड़ा रह गया| सोच रहा था उन्हें कैसे समझाऊँ, क्या करूँ| और जवाब भी मेरे सामने था| मुझे खुद उनसे बात करनी होगी| मैंने घोड़े को पूरी घास खिलाई और फिर भीड़ की ओर चल दिया| कुसुम और आलोक भी मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे| मुझे अपनी ओर आता देख वो लोग चिल्लाने लगे| बिलकुल वैसे ही जैसे किसी बड़े आदमी को देखकर चिल्लाते हैं| बड़ा अजीब सा पल था वो| एक तरफ घर के गेट के बाहर वो लोग थे जो मुझसे मिलना चाहते थे, जबरदस्ती अंदर घुसने की कोशिश कर रहे थे| दूसरी तरफ गेट के अंदर मेरे लोग थे जो मेरे लिए अपनी वफ़ादारी निभा रहे थे, उन्हें रोक रहे थे| और सबसे अहम बात, वो दोनों मेरे लिए आपस में लड़ रहे थे| मैंने अपने हाथ ऊपर करके उन्हें शांत होने के लिए इशारा किया| लेकिन वो लोग शांत नहीं हुए|

"शांत हो जाइए....." मैंने ऊँची आवाज़ में कहा| इस बार वो लोग शांत हुए| उन लोगों के शांत होते ही मैंने अपने लोगों की ओर देखा जो कब से उन्हें रोकने की कोशिश कर रहे थे| उन्होंने अब राहत भरी लंबी साँस ली| वो लोग मेरी ओर देख रहे थे| अपनी आँखों से मुझे धन्यवाद कह रहे थे| मैंने भी अपनी पलकें झुकाकर उन्हें जवाब दिया| और अंदर से मैं भी उन्हें धन्यवाद कह रहा था| कब से वो लोग मेरे लिए इतनी मेहनत जो कर रहे थे ताकि मुझे कोई तकलीफ ना हो|

★★★

फिर मैंने उन लोगों की ओर देखा जो गेट के उस पार थे| और उन्हें समझाते हुए कहा, "देखो आप सब मेरे लिए बराबर हो| एक-जैसे हो| लेकिन इतनी

समझ तो आप लोगों में भी होगी, कि इतने सारे लोगों से पर्सनली मिलना, एक-एक करके सबके सवालों के जवाब देना किसी के लिए भी पॉसिबल नहीं है| तो मैं चाहता हूँ कि आप में से जो सबसे काबिल हैं, सबसे बेहतर हैं, उन्हें ही अंदर आने दिया जाए|" मेरी बात सुनकर सबसे चेहरे उतर गए| मुझे भी अच्छा नहीं लगा| तो मैंने अपना फैसला बदलते हुए कहा, "अच्छा ठीक है तो हम ऐसा करते हैं कि, जो सबसे काबिल हैं, उन्हें मेरा इंटरव्यू लेने देते हैं और बाकी लोग उसे देखें और कवर करें, ठीक है?"

मेरा ये फैसला उनको मंज़ूर था| तो उन लोगों के लिए कुछ बंदोबस्त किए गए| कुछ तैयारियाँ मेरे इंटरव्यू के लिए की गईं|

★★★

मेरा साक्षात्कार

कुछ ही देर में मेरा इंटरव्यू शुरू हुआ| तभी कुसुम ने मुझे अखबार लाकर दिया| उसके फ्रंट पेज पर मेरी खबर थी वो भी काफी ख़ास| मैंने न्यूज़ हैडलाइन को जोर से पढ़ा, "कल्कि की बातें और वादे हैं बेबुनियाद!"

उसे पढ़कर मुझे थोड़ी हँसी सी आ गई| मैंने पूछा, "किसने छापा है ये?"

मेरे सामने बैठी एक लड़की रिपोर्टर और उसके साथ एक लड़का जिसके हाथ में कैमरा था, उन दोनों ने अपने सिर झुका लिए| मैं समझ गया ये उनका अखबार है| मैंने उनसे कहा, "कोई बात नहीं| मैं समझता हूँ| आपकी कोई गलती नहीं है और आपको शर्मिंदा होने की कोई जरूरत नहीं है|" फिर मैंने अखबार पढ़ना शुरू किया| उस न्यूज़ को पढ़कर मैंने कहा, "पता है मुझे पॉलिटिक्स में सबसे बुरा क्या लगता है? ये इलेक्शन का टाइम| इसमें सब एक-दूसरे पर भद्दे कमेंट्स मारते हैं, बड़ी-बड़ी बातें करते हैं| मुझे ये सब बिलकुल पसंद नहीं| इसीलिए मैंने फैलसा किया था कि मैं सिर्फ एक ही बार बोलूँगा, एक ही स्पीच दूँगा, और सिर्फ काम की बातें कहूँगा| खैर ये सब तो चलता रहेगा| आप लोग अपने सवाल कीजिए जिस काम के लिए आप यहाँ आए हैं|" मैं सोफे पर बैठा था| मैंने अखबार अपने बाजू में रखते हुए कहा|

★★★

ये मेरी जिंदगी का पहला इंटरव्यू था| मुझे कुछ नहीं पता था वो लोग मुझसे क्या पूछेंगे, उनका पहला सवाल क्या होगा| लेकिन जो पहला सवाल उन लोगों ने किया, मुझे वाकई उसकी उम्मीद नहीं थी| मुझे नहीं पता था लोगों की सुई अभी तक वहीं अटकी हुई है|

उन्होंने पूछा, "सर क्या आप वाकई कल्कि हैं? कलयुग के अवतार? आप कल्कि होने का दावा कैसे कर सकते हैं? आपको कैसे पता चला कि आप

कल्कि हैं?" वगैरह- वगैरह| मैं चुपचाप बैठा उन्हें सुनता रहा और उनके शांत होने का इंतज़ार करने लगा| और जब वो लोग शांत हुए, मैंने उनसे कहा, "अगर आप लोगों को ऐसे ही सवाल करने हैं तो प्लीज..... देखो मैंने कल भी कहा था, और आज फिर कह रहा हूँ| मैं कौन हूँ इससे कोई फर्क नहीं पड़ता| मैं क्या करूँगा, ये सवाल ज्यादा मायने रखता है|

एक बात और, ये मेरी जिंदगी का पहला इंटरव्यू है| इससे पहले ना मैंने कभी इंटरव्यू दिया है और ना ही देखा है| हाँ इतना जरूर सुना है कि कुछ लोगों को इंटरव्यू पसंद नहीं होते| क्योंकि कभी-कभी आप लोग कुछ ऐसे सवाल करते हो जो आप लोगों को नहीं करने चाहिएँ| उम्मीद करता हूँ मेरे साथ ऐसा नहीं होगा| आप लोग मुझसे वही सवाल करेंगे जो आप लोगों को करने चाहिएँ और जिनके जवाब से बाकी लोगों को भी उनके सवालों के जवाब मिल सकें|"

★★★

मुझसे पहला सवाल एक जवान लड़के ने किया, "सर हमने सुना है कि पहले आप हम जैसे ही एक आम आदमी थे| लेकिन अब आप गैलेक्सी किंग, जो इस देश की सबसे बड़ी कंपनी है, और दुनिया की तमाम बड़ी कंपनियों में इसका नाम आता है, आप इसके मालिक हैं, तो आपको कैसा लगता है? आप कैसा फील करते हैं?"

"आपने जो सुना है वो बिलकुल सही है| अब तक की मेरी जिंदगी काफी साधारण तरीके से बीती है| और आज भी मैं वैसे ही जीता हूँ, बहुत ही साधारण| मैं इस दौलत को लेकर, इस शोहरत को लेकर एक अमीरजादे जैसा कुछ फील नहीं करता| ये सब मेरे पापा ने कमाया है, मैं इसे बस संभाल के रखना चाहता हूँ, इसे और आगे ले जाना चाहता हूँ| और जहाँ तक मेरी बात है, मेरी मंजिलें और मेरे रास्ते बिलकुल अलग हैं| और वो आप लोगों को पता हैं|"

"सर आपका 9 साल पहले का किस्सा बहुत मशहूर है| उस वक़्त आप काफी सुर्ख़ियों में थे| क्या उसके पीछे कोई वजह थी? आप पार्लियामेंट में कैसे पहुँच गए थे?" एक लड़की ने अपनी जगह से उठकर मुझसे पूछा|

★★★

मैंने एक लंबी साँस ली| और अपनी जिंदगी का 9 साल पहले का का किस्सा याद किया| उसे याद करते हुए मैंने कहा, "असल में बात ये है कि, मेरे परिवार

के साथ एक हादसा हुआ था| हमारे गांव का जो मुखिया था, उसने मेरे माँ-बाबा के साथ कुछ धोखेबाज़ी की थी| और गांव में किसी की हिम्मत नहीं थी कि उससे कुछ कहे| वो एक नंबर का गुंडा था और उसके गुंडे भी थे| अजीब लेकिन अच्छी बात ये थी कि उस वक़्त मेरे साथ एक और हादसा हो रहा था| अगर ये हादसा ना होता तो मुझे उस हादसे के बारे में पता नहीं चल पाता| दरअसल उन दिनों मैं दिल्ली में रहता था| अपनी दीदी के साथ| मुझे कुसुम की शादी का कार्ड मिला था| और मैं कुसुम से प्यार करता था| तो उसकी शादी रोकने के लिए मैं गांव चला गया था| मुझे बचपन में ही अपनी कुछ शक्तियों का पता चल गया था, इसलिए मैं जानता था कि मैं वो शादी रोक सकता हूँ| तो मैं कुसुम की शादी रोकने गांव पहुँच गया| कुछ वैसे ही कपड़े पहनकर जो मैं साल-भर पहले तक पहनता था| वहाँ मैंने कुसुम की शादी रोकी| जिन लोगों ने मुझे रोकने की कोशिश की, मैंने उन्हें अकेले ही पीटा| अगले दिन जाने-अनजाने मुझे माँ-बाबा के साथ हो रहे उस धोखे का पता चला| दूसरी तरफ ये बात पूरे गांव में फैल चुकी थी कि एक बच्चा जिसने अजीब-से कपड़े पहने थे, अकेले ही काफी लोगों की धुलाई कर दी| तो मुझे लगा इस मौके को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए| मैंने हमारे गांव के मुखिया के खिलाफ केस किया और अपने माँ-बाबा को इंसाफ भी दिलवाया| मैं जानता था मेरे जाने के बाद वो मेरे माँ-बाबा को फिर से तंग करेगा| इसलिए जाने से पहले मैंने उसे धमकी दी कि अगर उसने मेरे माँ-बाबा की ओर आँख उठाकर भी देखा, तो उसके लिए अच्छा नहीं होगा| और मेरी धमकियाँ हमेशा काम करती थी|

और पार्लियामेंट में पहुँचने की बात कुछ ऐसी है कि, जिस कोर्ट में हमारा केस चल रहा था, उस कोर्ट के जज बहुत अच्छे थे| उन्होंने मेरी बात सुनी और मुझे माँ-बाबा की तरफ से केस लड़ने की इजाजत दी| वो मुझसे काफी प्रभावित हुए| मैंने पहली बार उनसे ही कहा था कि इस देश को एक बहुत बड़े बदलाव की जरूरत है| और वो मुझसे सहमत भी थे| इसलिए वो मुझे पार्लियामेंट ले गए| उनका मानना था कि मैं बहुत अच्छा बोलता हूँ और लोगों को अपनी बातों से प्रेरित कर सकता हूँ| लेकिन अफ़सोस, जो सोचा था वैसा कुछ नहीं हुआ|" मैं थोड़ा दुखी हो गया वो बात कहकर|

★★★

चश्मा लगाए सबसे आगे बैठे एक लड़के ने मुझसे पूछा, "सर, 9 साल पहले आपने लोगों से उनका साथ माँगा था लेकिन किसी ने आपका साथ नहीं दिया, तो क्या आपको लोगों से शिकायत है?"

"मुझे इस बारे में कुछ नहीं कहना|" मैंने थोड़ी बेरुखी से कहा|

"सॉरी सर!" उसने शर्मिंदा होकर कहा|

उसके साथ बैठी एक लड़की ने कहा, "सर उस वक़्त जो दंगे हुए थे, उसके बाद से आप गायब हो गए थे| हर तरफ ये अफवाह फैल रही थी कि आप मर गए हैं| आपको तो मृत भी घोषित कर दिया गया था| इस बात में कितनी सच्चाई है?"

मैं उस लड़की को एक दम हैरान होकर देखने लगा, और कहा, "कमाल है| मैं आपके सामने बैठा हूँ और आप मुझे मरा हुआ कह रही हैं! सच में इस देश में कुछ भी हो सकता है| मतलब हद है यार!"

"तो पिछले 8 सालों से आप कहाँ थे?" उसने फिर पूछा| मैंने कहा, "मैं अपनी फैमिली के साथ यहाँ से बहुत दूर चला गया था| और जब मुझे मेरे चाचा जी ने ढूंढ लिया और मुझे मेरी हकीकत बताई, तो मैं लौट आया|"

"सर आज से करीब एक साल पहले आपने अपना एक ब्लॉग बनाया था जिसपर लोग आपसे मदद मांगते थे और आप उनकी मदद करने पहुँच जाते थे| आपको अपना वो फैसला कैसा लगता है?" वो सवाल सुनकर मैंने खुद को कोसते हुए कहा, "अच्छा सवाल है| मुझे लगता है मेरा वो फैसला काफी स्टुपिड था| काफी बेवकूफ़ी भरा| मैंने 9 साल पहले एक कोशिश की थी, तब भी कुछ नहीं हुआ| 1 साल पहले एक और कोशिश की| सोचा कुछ टॉप लिस्टेड लोगों को सबके सामने धोऊँगा तो दूसरों में डर बैठेगा| डर से ही सही, वो अपने बुरे काम तो बंद करेंगे| लेकिन..... क्या बोलूँ अब| नो कमेंट्स!"

★★★

"सर आपको कभी कुछ करते हुए या किसी को पीटते हुए कोई अफ़सोस हुआ?" चाचा जी की उम्र के एक अंकल ने अपनी जगह से उठकर पूछा| मैंने थोड़ा याद किया और कहा, "नहीं सर ऐसा कुछ नहीं है| मैंने जो भी कदम उठाए, काफी सोच-समझकर उठाए| जिस किसी पर हाथ उठाया, उसके बारे में सबकुछ जानने के बाद उठाया| हाँ मुझे एक बात का बहुत अफ़सोस है और हमेशा रहेगा| लेकिन ये बात बहुत पुरानी है| और मेरे किसी भी काम से जुड़ी हुई नहीं है| मैं छोटा बच्चा था| मेरी आँखों के सामने हमारे गांव में एक लड़की के साथ कुछ बदमाशों ने जबरदस्ती की थी| मैं उन्हें रोक सकता था लेकिन किसी वजह से नहीं रोका| और अगले दिन पूरे गांव के सामने मुझसे

उन बदमाशों को पहचानने को कहा गया| मैंने उस वक़्त भी सच नहीं बोला| मुझे उस बात का बहुत अफ़सोस है| बहुत|" मैंने दुखी होकर कहा और नज़रें झुखाए बैठा रहा|

"आपने ऐसा क्यों किया?" उन्होंने फिर पूछा| मैं गुमसुम सा बैठा था और अपनी गुमसुम सी आवाज़ में बोला, "मैंने बताया ना, मुझे अपनी कुछ शक्तियों का बचपन में ही पता चल गया था| और मेरी दीदी डरती थी कि मेरा दूसरों से अलग होना मेरे लिए खतरा ना बन जाए| इसलिए दीदी चाहती थी कि मैं सबसे दूर रहूँ| तो मैं सबसे, हर मुसीबत से दूर रहने लगा| अपने परिवार की हिफाजत के लिए|"

★★★

पीछे से एक लड़की ने पूछा, "सर आपको क्या लगता है? इस बार आपको लोगों का साथ मिलेगा?"

"पता नहीं| शायद हाँ| या शायद ना| जो भी हो, ये लोगों पर है| मुझे बस हार-जीत से कोई मतलब नहीं| क्योंकि मैं यहाँ अपनी सरकार बनाने नहीं आया हूँ| हालात बदलने आया हूँ| और ये सब मैं सिर्फ और सिर्फ आप लोगों की भलाई के लिए कर रहा हूँ| अब ये लोगों पर है| सालों से चूना लगा रहे लोगों को चुनना है, या मुझे| मैं बस इतना कहूँगा कि कल मैंने जो बात कही थी, उसे याद रखना| ये आप लोगों के लिए पहला और आखरी मौका है| बाकी आप लोगों की मर्जी|"

"सर कुछ लोगों का कहना है कि इस बात की क्या गारंटी कि आप पॉलिटिक्स में पैसे कमाने नहीं आए हैं?"

"ऐसे लोगों की सोच का मैं कुछ नहीं कर सकता| बहुत कोशिश कर ली मैंने| सच में कुछ नहीं कर सकता|"

तभी पीछे से एक बुजुर्ग औरत मेरे सामने आई| मैं अपनी जगह से उठा और उनकी ओर बढ़ने लगा| उनके पास पहुँचकर मैंने उनके हाथ थाम लिए| उन्होंने कहा, "बेटा, क्या मैं तुमपर भरोसा कर सकती हूँ? क्या तुम मेरी और मुझ जैसे अनगिनत लोगों की मदद करोगे?"

★★★

मैं उनका हाथ पकड़कर और उन्हें सहारा देते हुए अपने साथ आगे ले आया और जहाँ मैं बैठा था उन्हें वहाँ बैठा दिया| फिर मैं उनके सामने अपने घुटनों पर बैठ गया और उनके हाथ अपने हाथों में लेकर मैंने कहा, "मैं आपको

विश्वास दिलाता हूँ, आप मुझपर भरोसा कर सकती हैं| और मैं आपसे वादा करता हूँ, मैंने जो भी वादे किए हैं, मैं वो सब पूरे करूँगा| वो भी बताए वक़्त में| और अगर मैंने ऐसा नहीं किया, तो मैं खुद आपके पास आऊँगा| आप मुझे जो सजा देना चाहें, दे सकती हैं|" ये सुनकर सबके चेहरों पर खुशी छा गई|

किसी ने मुझसे पूछा, "लेकिन सर आप ये सब करेंगे कैसे? आपने 3 वादे किए हैं और तीनों ही....." वो सवाल मुझे थोड़ा दमदार लगा| इसे सुनकर थोड़ी हँसी भी आई और थोड़ा सोच में भी पड़ गया| मैं उठा और धीरे से पीछे मुड़ा और जिस आदमी ने वो सवाल किया उसे देखने लगा| सब लोग मुझे ही देख रहे थे| क्योंकि ये सवाल काफी बड़ा और काफी मायने रखता था| सबके लिए| मैंने ना सिर्फ उनसे बल्कि पूरे देश से कहा, "मैं जानता हूँ आप सब इस सवाल का जवाब सुनना चाहते हैं| मैंने जो वादे किए हैं, वो बहुत-बहुत बड़े हैं| उनका पूरा होना मुमकिन नज़र नहीं आता| लेकिन वो पूरे होंगे, मैं वादा करता हूँ| पहली बात, मैं यहाँ चंद पैसों के लिए नहीं आया हूँ| मेरी इनती हैसियत तो है कि मैं आपकी सरकार को खरीद सकता हूँ| तो मेरी नीयत पे तो शक करना ही मत| और दूसरी बात, मैं किसी से नहीं डरता| मैं कोई आम इंसान नहीं कि कोई मुझे डरा कर मेरा फैसला बदल दे| तभी तो कहता हूँ, ये आप सबके लिए पहला और आखरी मौका है| मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ| मैं इंसानों के बस का नहीं हूँ| कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता| देखना मैं आप सबके सामने इस देश को पलटकर रख दूँगा और कोई मेरा कुछ नहीं कर पाएगा| बस मेरा साथ दो| क्योंकि मैं ये सब सही तरीके से करना चाहता हूँ| गलत तरीके से करना होता तो कब का कर चुका होता| मुझे नहीं लगता इस दुनिया में कोई ऐसी ताकत है जो मुझे रोक सकती है|"

★★★

"सर आप और कुसुम मैम कैसे मिले?"

मैंने हल्का-सा मुस्कुराते हुए कहा, "हमारी लव स्टोरी कुछ ख़ास नहीं है| मैं और कुसुम एक ही गांव में रहते थे, एक ही क्लास में पढ़ते थे| फिर एक दिन कुसुम ने मेरा दूसरा रूप देखा| अपने उस रूप को लेकर मैं परेशान रहता था| और कुसुम अक्सर मुझे समझाया करती थी, मुझे संभाला करती थी| हमारे साथ वो सब कभी नहीं हुआ| डेट पर जाना, घूमना-फिरना, खूब बातें करना| हम दोनों में से किसी ने एक-दूसरे को प्रपोज तक नहीं किया| लेकिन हमारे दिल एक थे, तो मिल गए|"

उन सबके बीच में से एक लड़की उठी और उसने मुझसे पूछा, "सर मैंने आपके बारे में पढ़ा है| आपका जन्म तो इस दुनिया को खत्म करने के लिए हुआ है ना! तो फिर आप अपना मकसद भूलाकर ये सब क्यों कर रहे हैं? क्या आप वाकई जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं? क्या आपको वाकई लगता है कि जो फैसला आपने लिया है वो सही है?"

मैं उस लड़की को आँखें बड़ी करके देखने लगा| सब लोग उसे देखने लगे| मैंने उसका नाम पूछा, "आपका नाम क्या है?"

"नीलम| नीलम शर्मा|" उसने कहा| मैं उलझन में था| मैंने कहा, "नीलम जी काफी खतरनाक सवाल पूछ लिया आपने|" मेरी बात सुनकर सब लोग हँसने लगे| मैंने कहा, "नहीं सच में| बहुत सही सवाल किया है इन्होंने| यही सवाल मैं खुद अक्सर खुद से करता रहता हूँ| और इस सवाल का जवाब मेरे पास भी नहीं है|"

★★★

मैं इधर-उधर टहलते हुए सोच रहा था कि इस सवाल का क्या जवाब दूँ| टहलते-टहलते मैंने कहा, "सच कहूँ तो मुझे खुद काफी अजीब लगता है कि मैं कल्कि हूँ| यकीन ही नहीं होता| आज जिस दुनिया में हम जी रहे हैं, जहाँ साइंस ही भगवान है, यहाँ भगवान या उनका कोई अवतार कैसे आ सकता है! पहले की बात अलग थी| उस वक़्त देवता-दानव सब हुआ करते थे| लेकिन आज..... सच में मुझे बिलकुल यकीन नहीं होता| लेकिन मैं हूँ|

जब मुझे चाचा जी मिले और उन्होंने बताया कि मैं भगवान श्री विष्णु जी का आखरी अवतार कल्कि हूँ, मुझे लगा ये क्या बकवास कर रहे हैं| मैंने उनका यकीन ही नहीं किया| तो उन्होंने कहा तुम ही बता दो और क्या वजह है तुम्हारे ऐसे होने की| मेरे पास कोई जवाब नहीं था| फिर उन्होंने मुझे 2 चीजें दिखाई| एक मेरा घोड़ा, जो मेरे सिवा किसी और को अपने पास नहीं आने देता| और दूसरी मेरी तलवार, जिसमें शक्तियाँ हैं|

मेरे दादा जी ने मेरी भविष्यवाणी की थी| और जिस दिन मेरा जन्म हुआ, लोगों ने मुझे मारने की कोशिश की, ताकि बड़ा होकर मैं उन लोगों के लिए कोई खतरा ना बन जाऊँ| और मुझे बचाते-बचाते मेरे माँ-बाबा..... सबको मेरे आने की वजह पता थी| लेकिन मेरे माँ-बाबा नहीं चाहते थे कि मैं वो सब करूँ| वो चाहते थे कि मैं इस दुनिया के लिए एक मिशाल बनूँ, उनमें सो रही इंसानियत को एक बार फिर जगाऊँ, उन्हें एक अच्छा इंसान बनाऊँ|

ये आज ही की बात थोड़ी ना है| बुरे लोग तो उस जमाने में भी हुआ करते थे| हाँ ये बात अलग है कि आज कुछ ज्यादा ही हैं| वैसे भी और..... वैसे भी|

मैं नहीं जानता मैं जो कर रहा हूँ वो सही है या गलत| लेकिन इतना जरूर जानता हूँ जिस काम के लिए मुझे भेजा गया है, मैं वो काम नहीं कर सकता| मैं बस भगवान के नक्शे-कदमों पर चल रहा हूँ, वही कर रहा हूँ जो वो खुद करते थे| मैं बुराई को खत्म करना चाहता हूँ, मासूम और कमज़ोर लोगों को न्याय दिलाना चाहता हूँ, बुरे लोगों से आजाद करवाना चाहता हूँ| इतनी तबाही कि पूरी दुनिया खत्म कर दो..... मुझसे नहीं होगा| और वैसे भी, हम इंसान अकेले ही तो नहीं इस धरती पे| और भी हैं| हमारे कुकर्मों की वजह से वो क्यों मरें?"

★★★

मेरी बातें सुनकर सब लोग अपना सिर झुकाकर बैठ गए| शायद कुछ शर्मिंदगी महसूस कर रहे थे|

"कोई और सवाल?" मैंने पूछा| लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा| मैंने कहा, "मेरे खयाल से आप लोगों के सवाल-जवाब हो गए होंगे| तो अब मैं चलता हूँ|" मैं जाने लगा तभी पीछे से नीलम जी ने कहा, "सर....."

मैं मुड़ा| मुड़कर कहा, "जी कहिए|"

"सर क्या आप हमारे साथ अपनी जिंदगी की कहानी बाटेंगे?" ये सुनकर मुझे थोड़ा अजीब लगा| मैंने अलग-से हाव-भाव के साथ कहा, "मेरी कहानी?"

नीलम जी ने कहा, "जी हाँ सर आपकी कहानी| और सिर्फ मैं ही नहीं हम सब आपकी कहानी सुनना चाहते हैं| पूरा देश| आपकी जिंदगी काफी इंटरेस्टिंग है| और आप तो आखरी अवतार हैं| अब कभी ऐसा कोई मिरेकल नहीं होगा| ये हम सबके लिए कितनी गर्व की बात है कि एक मसीहा, एक अवतार हमारे बीच है| हम सब आपकी जिंदगी के बारे में जानना चाहते हैं|" मैं सबको देखने लगा और इशारों में पूछने लगा कि क्या उन्हें मेरी कहानी सुननी है? सब अपना सिर हिलाकर हाँ कहने लगे| मैंने एक लंबी साँस ली और कहा, "ठीक है|"

★★★

Enjoyed reading this sample?

Purchase the whole copy at

amazon.in